बिल्ली बोले म्याऊँ

कविता संग्रह

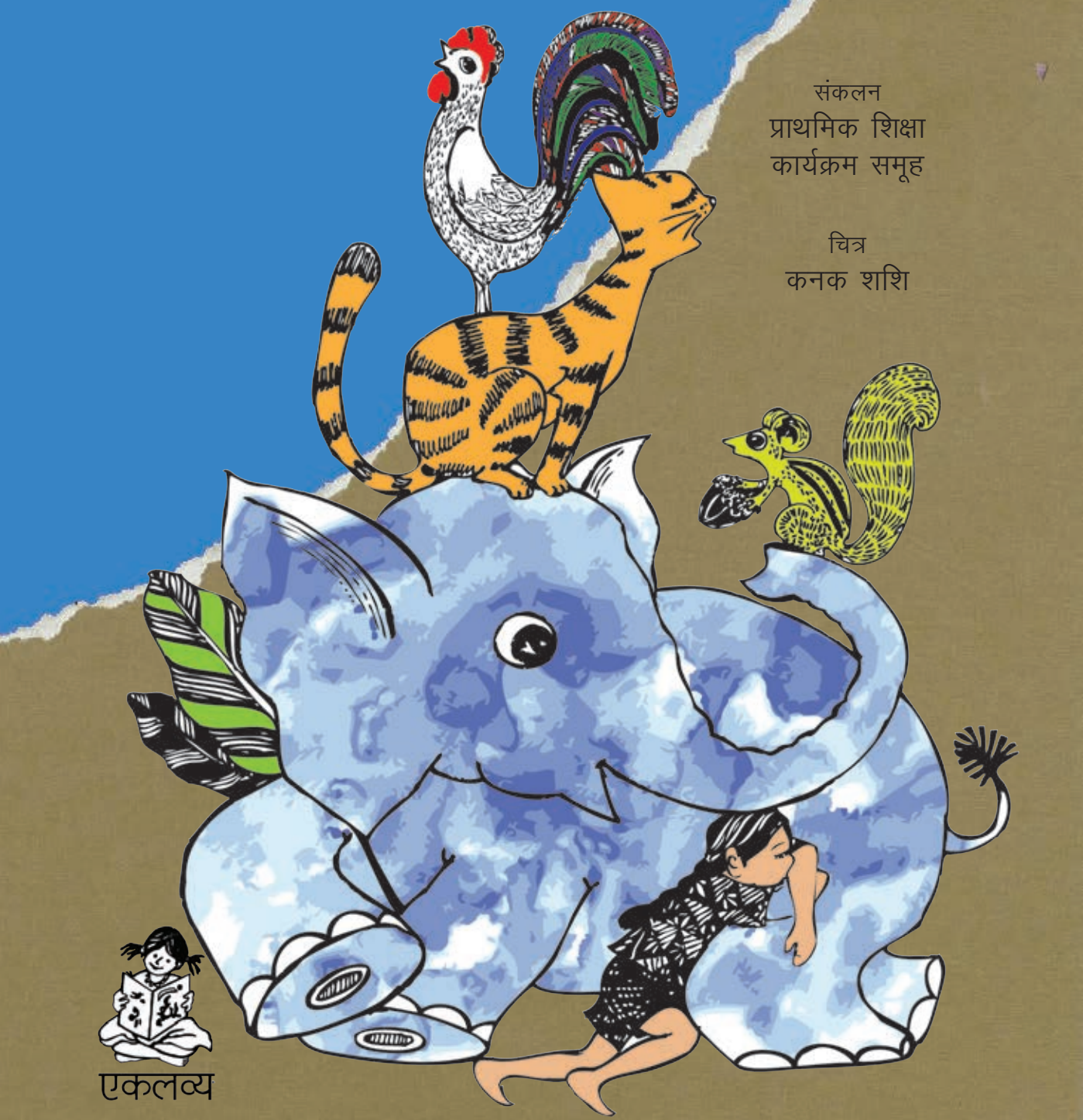

संकलन
प्राथमिक शिक्षा
कार्यक्रम समूह

चित्र
कनक शशि

एकलव्य

बिल्ली बोले म्याऊँ

कविता संग्रह

संकलन
प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम समूह (प्राशिका)

चित्र
कनक शशि

एकलव्य

विषय सूची

	बड़ों से दो बातें	4
1.	मुर्गी माँ	7
2.	घण्टा बोला	8
3.	काली जामुन	9
4.	चूँ-चूँ चिड़िया	10
5.	तोता	10
6.	नानी कहे कहानी	11
7.	चन्दा मामा	11
8.	पतंग	12
9.	पानी आया	12
10.	एक बुढ़िया	13
11.	राम सहाय	13
12.	हाथी	14
13.	धम्मक-धम्मक	15
14.	मुर्गा बोला	16
15.	चिड़िया-चिड़िया उड़ती जा	17
16.	क्या-क्या काला	18
17.	एक-अनेक	20
18.	लाल-लाल	21

19. पकौड़ी गीत 22
20. बन्दर मामा 23
21. चूहा 24
22. बन्दर 24
23. जामुन 25
24. बिल्ली 25
25. बिल्ली बोले म्याऊँ 26
26. चींटा 27
27. फुग्गा 28
28. हिन-हिन 29
29. नानाजी-नानीजी 30
30. खट-खट 32
31. गप्पू-गपोड़ 32
32. पान की डलिया 33
33. हाथी 33
34. क्या-क्या होता गोल 34
35. रेल का खेल 36
36. छुक-छुक रुक-रुक 37
37. रेलगाड़ी मेरा नाम 38
38. कुम्हार 39
39. बकरी 39

बड़ों से दो बातें

इस संग्रह की कविताएँ पाँच से सात साल की उम्र के बच्चों के लिए हैं। इनका संकलन एकलव्य के प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम के विकास के दौरान हुआ है। इस कार्यक्रम की शुरुआत कक्षा एक से पाँच तक एक सार्थक और रोचक पाठयक्रम व पाठयसाम्रगी विकसित करने के उद्देश्य से हुई थी।

कक्षा एक के लिए साम्रगी का विकास करते समय यह सवाल उठा कि क्या भाषा के पाठयक्रम का महत्व केवल पढ़ना सीखने तक ही है? चर्चा से यह बात उभरी – "चूँकि भाषा, सम्प्रेषण और सोच दोनों का माध्यम है, इसलिए मौखिक अभिव्यक्ति, सम्प्रेषण व समझ उतनी ही ज़रूरी है जितना कि पढ़ना सीखना।" यह भी समझ बनी कि पढ़कर समझने के लिए मौखिक भाषा की समझ, ध्वनि-विच्छेद व ध्वनि-अक्षर सम्बन्ध को समझना भी ज़रूरी है। साथ ही भाषा के प्रति रुचि जगाना भी उतना ही महत्वपूर्ण है। इसके लिए रोचक सन्दर्भों की आवश्यकता होती है। यह राय बनी कि सर्वाधिक उपयुक्त माध्यम कविता हो सकती है क्योंकि कविता में लय, ध्वनि और शब्दो की आवृति भी है। इनमें निहित भावों का अभिनय भी कराया जा सकता है। हाव-भाव के साथ गाने और कविता के ज़रिए पढ़ना सीखने की गतिविधियाँ करते हुए हमने पाया कि बच्चे कविताओं के माध्यम से बहुत जल्दी शब्द, अक्षर और मात्राएँ पहचानने लगते हैं। चूँकि इस प्रकार की गतिविधियों से पढ़ने की प्रक्रिया कविता के रोचक सन्दर्भों से जुड़ती है इसलिए पढ़ने की ललक भी बढ़ती है। ये अनुभव ही इस संकलन की पृष्ठभूमि बने।

हमने इस सकंलन में यह ध्यान रखा कि कविताएँ महज़ उपदेशात्मक न हो जाएँ। इसका मतलब यह नहीं कि ये कविताएँ सिर्फ मज़े के लिए हैं – इनसे बच्चे बहुत कुछ सीखेंगे भी। इस संकलन की लगभग हरेक कविता में कोई न कोई पात्र छिपा है जो इनकी सबसे बड़ी खासियत है। बच्चे खुद को इन पात्रों – **बन्दर, मुर्गा, स्कूल जाता बच्चा, लड़की** या फिर **नानाजी-नानीजी** आदि के करीब पाएँगे।

कई कविताओं में मज़ेदार कथानक हैं, जैसे- **बन्दर मामा** या फिर **जामुन** या **नानाजी-नानीजी**। ऐसी कविताओं में फँतासी तो है ही, दुनिया के बारे में सीखने-समझने को भी बहुत कुछ है। **नानाजी-नानीजी** में एक निश्चित क्रम में ऊँचाई की आवधारणा से परिचित कराने की कोशिश है। **जामुन** कविता में फलों और बीजों का सम्बन्ध अनहोनी घटनाओं से उभारा गया है।

कविताओं का उपयोग

शुरुआत: सीखने की प्रकिया में झिझक और भय सबसे बड़ी बाधा है। बच्चों में नए माहौल, नए समूह के बीच खुद को अभिव्यक्त करने में झिझक होती है। लयात्मक कविताओं को साथ मिलकर गाने या हाव-भाव के साथ पाठ करने से वे इस प्रकिया में आसानी से रम जाते हैं। इससे बच्चों को कविताएँ याद भी हो जाती हैं। इस संग्रह की छोटी कविताएँ – **मुर्गी माँ, हाथी, चूहा, छुक-छुक रुक-रुक, बन्दर मामा** आदि को हाव-भाव और ऐक्शन के साथ कराएँ तो बच्चों को मज़ा आएगा। सभी बच्चों को इस प्रक्रिया में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करें ताकि उनकी हिचक दूर हो।

जानकारी: रंगों, आकारों की पहचान और कम-ज़्यादा की समझ पाँच से छह साल के बच्चों को होने लगती है। इस संग्रह की कुछ कविताएँ, जैसे- **क्या-क्या काला, लाल-लाल, क्या-क्या होता गोल, एक-अनेक** आदि इस समझ को अभिव्यक्त करने का मौका देती हैं। बच्चों की झिझक तोड़ने और जल्दी सोचकर बताने के लिए भी ये कविताएँ बहुत उपयोगी हैं।

अभिनय: कुछ कविताओ में पात्र हैं, जैसे- **छुक-छुक रुक-रुक, खट-खट, बन्दर मामा, नानाजी-नानीजी।** बच्चों को पात्र बनाकर इनका अभिनय कराएँ, उन्हें खूब मज़ा आएगा।

पढ़ना सीखना: एक सवाल हो सकता है कि बच्चे पढ़ना जानते हों तब तो कविताएँ पढ़ेंगे? लेकिन एक दूसरा तरीका भी है। कविताओं में शब्द और अक्षर पहचानकर पढ़ना सीखा जा सकता है। इसके लिए कुछ खास तरह की कविताओं की ज़रूरत होती है। इन कविताओं में कुछ शब्दों, अक्षरों या

मात्राओं की पुनरावृत्ति कई बार की जाती है। जैसे- **धम्मक-धम्मक, चूहा, पंतग, खट-खट।** इन कविताओं को श्यामपट पर लिखा जा सकता है या फिर इनके कविता पोस्टर बनाकर कक्षा या कमरे में टाँगे जा सकते हैं। कविता की हर पंक्ति पर उँगली रखकर दोहराएँ। फिर बार-बार आने वाले शब्दों की पहचान कराएँ, जैसे- **धम्मक-धम्मक** में हाथी, जाता, पानी आदि की या **चूहा** में चूहा, चमकाता, मुस्काता, जाता, आता आदि। इन्हीं शब्दों को तोड़कर अक्षरों और मात्राओं की पहचान और उनसे नए शब्द बनाने की गतिविधियाँ कराई जा सकती हैं। इन कविताओं से ह, थ, ज, क, च, अ, प, ा, ी आदि की पहचान व इनसे नए शब्द और वाक्यों को बनाने का अभ्यास कराया जा सकता है। ऐसी गतिविधियाँ अन्य कविताओं के साथ भी की जा सकती हैं। एक बात का ध्यान ज़रूर रखना होगा – कविताओं से पढ़ने-लिखने की गतिविधियाँ तब कराएँ जब बच्चे मौखिक रूप से इनसे काफी परिचित हो चुके हों।

ये कविताएँ उद्देश्यों की पूर्ति के लिए उदाहरण मात्र हैं। बच्चों के लिए कई कविता संग्रह उपलब्ध हैं जिनसे कक्षा में उपयोग के लिए इस तरह की और भी कविताएँ चुनी जा सकती हैं।

ये कविताएँ एकलव्य के प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम समूह द्वारा समय-समय पर विभिन्न स्रोतों से साभार संकलित की गई हैं। इस संग्रह में प्रकाशित सभी कविताओं के लेखकों के प्रति एकलव्य आभारी है। कुछ कविताओं के साथ लेखकों के नाम नहीं जा सके हैं। ऐसा नाम मालूम नहीं होने के कारण हुआ। हमें इसका खेद है। अगर सुधी पाठक लेखकों के नाम जानते हों तो कृपया हमें लिख भेजें ताकि अगले संस्करण में उन्हें कविताओं के साथ प्रकाशित किया जा सके।

– प्राशिका समूह, एकलव्य

मुर्गी माँ

मुर्गी माँ घर से निकली,
झोला ले बाज़ार चली,
बच्चे बोले चें-चें-चें,
अम्माँ हम भी साथ चलें।

– निरंकार देव सेवक

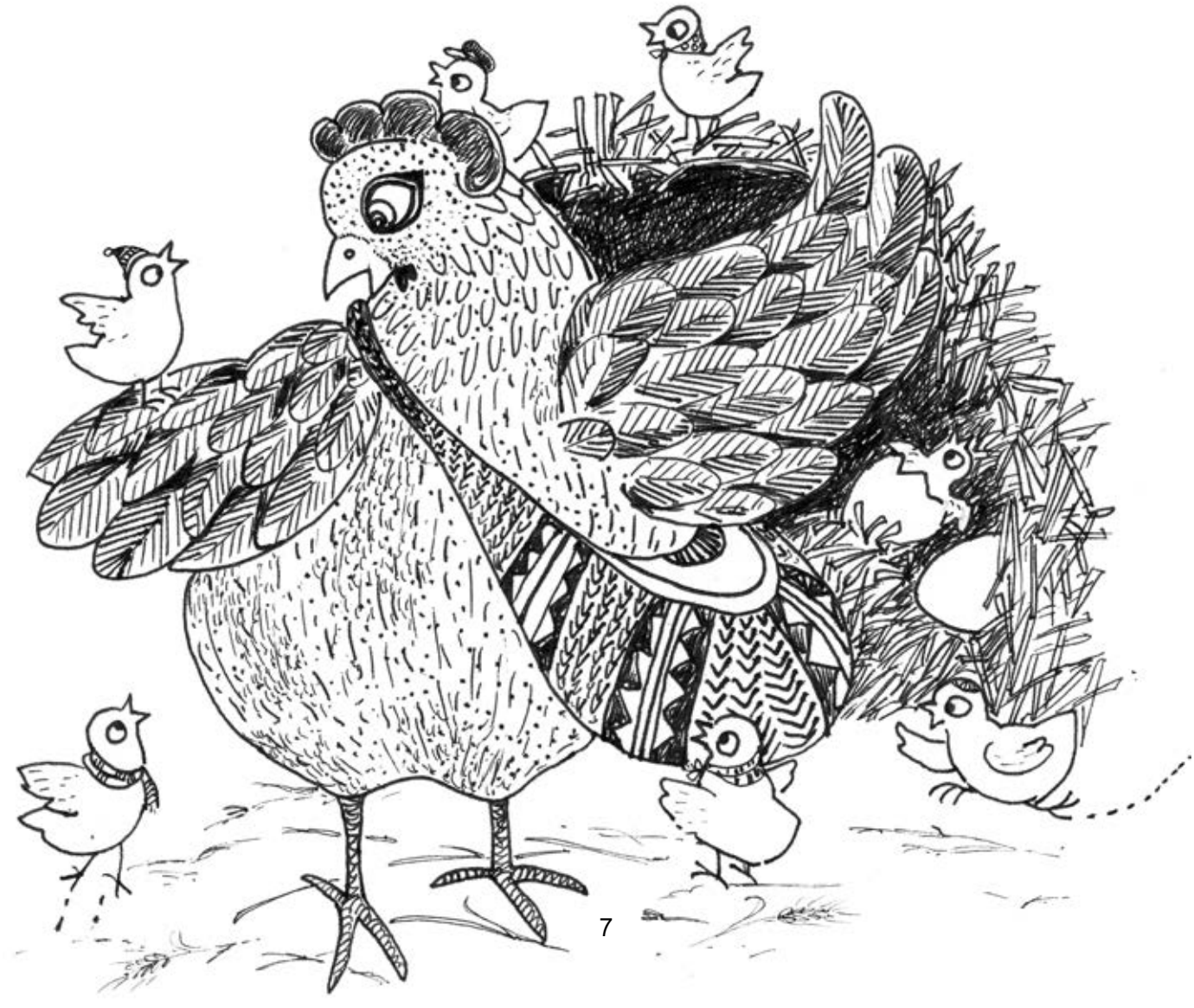

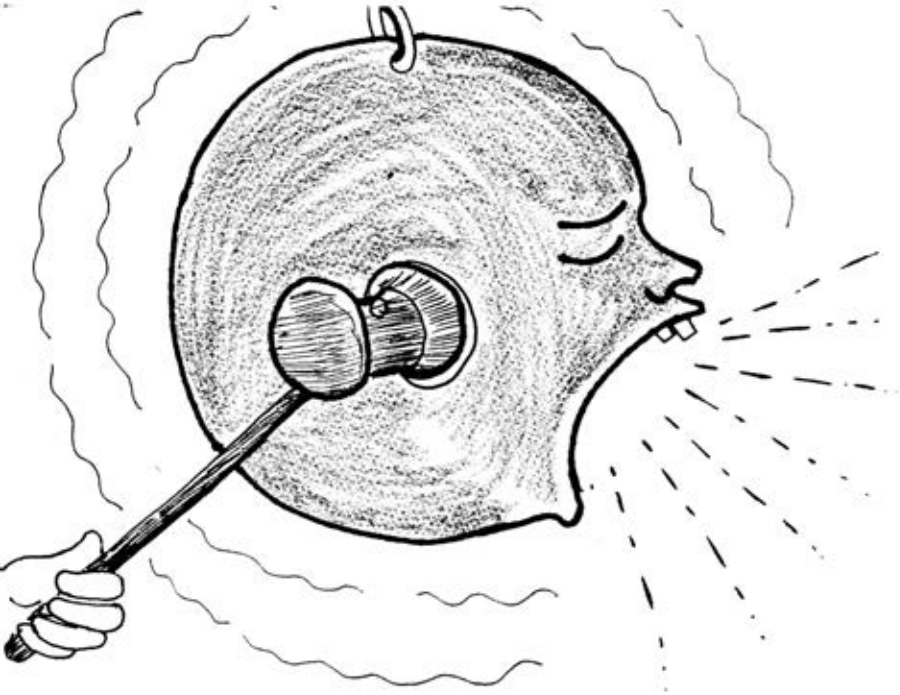

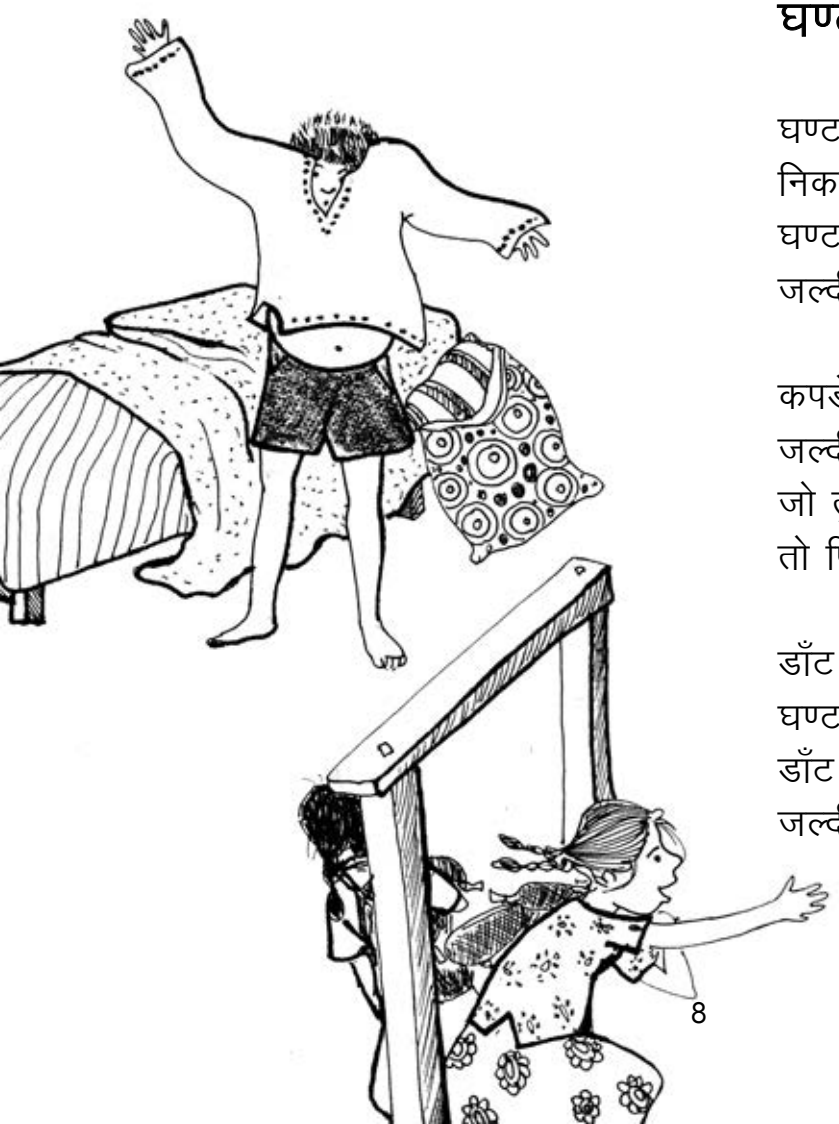

घण्टा बोला

घण्टा बोला चलो मदरसे,
निकलो, निकलो, निकलो घर से।
घण्टा बोला चलो मदरसे,
जल्दी निकलो अपने घर से।

कपड़े पहनो, बस्ता ले लो,
जल्दी निकलो अपने घर से।
जो तुम देर करोगे भैया,
तो फिर होगी धम्मक-धैया।

डाँट पड़ेगी इधर-उधर से,
घण्टा बोला चलो मदरसे।
डाँट पड़ेगी इधर-उधर से,
जल्दी निकलो अपने घर से।

काली जामुन

आओ आओ
खुशी से आओ,
गाओ गाओ
सब मिल गाओ।
जामुन है ये
काली-काली,
लटक रही है
डाली-डाली।
देखो मैं ऊपर
चढ़ जाऊँ
डाल पकड़कर
खूब हिलाऊँ।
बरस पड़ेंगी
टप-टप, टप-टप
बीनो उनको
झट-पट, झट-पट
चलो चलेंगे
नदी किनारे,
धो-धो सब
खाएँगे प्यारे।

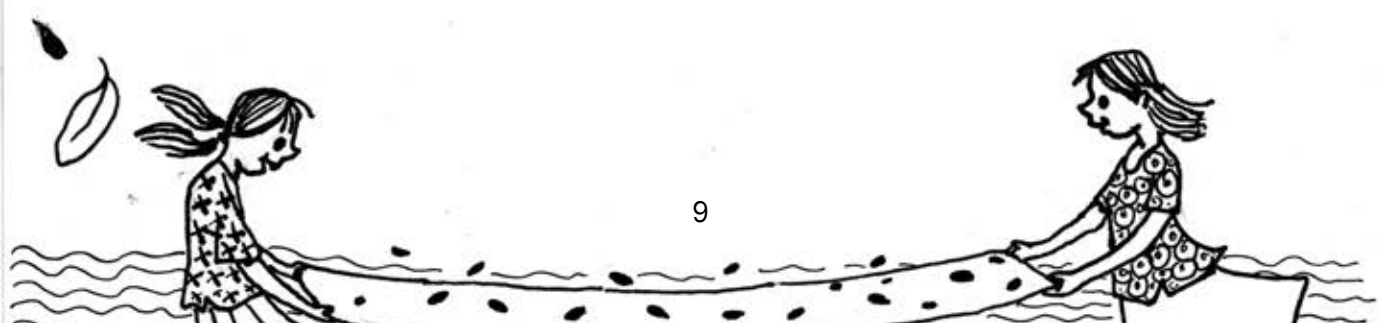

चूँ-चूँ चिड़िया

चूँ-चूँ करती चिड़िया आई,
चुन-चुनकर वह दाना लाई,
बच्चे भी मुँह खोल रहे हैं,
चूँ-चूँ, चूँ-चूँ बोल रहे हैं,
बड़े जतन से पाल रही है,
दिनभर उसका काम यही है,
बच्चे थोड़ा बढ़ जाएँगे,
फर से वे सब उड़ जाएँगे।

तोता

तोता हरे-हरे पर वाला
पहने कण्ठा लाल और काला।
लाल-लाल है चोंच नुकीली
आँखें कैसी नीली-पीली।
कुतर-कुतर फल खाता है
टें-टें-टें चिल्लाता है।

– निरंकार देव सेवक

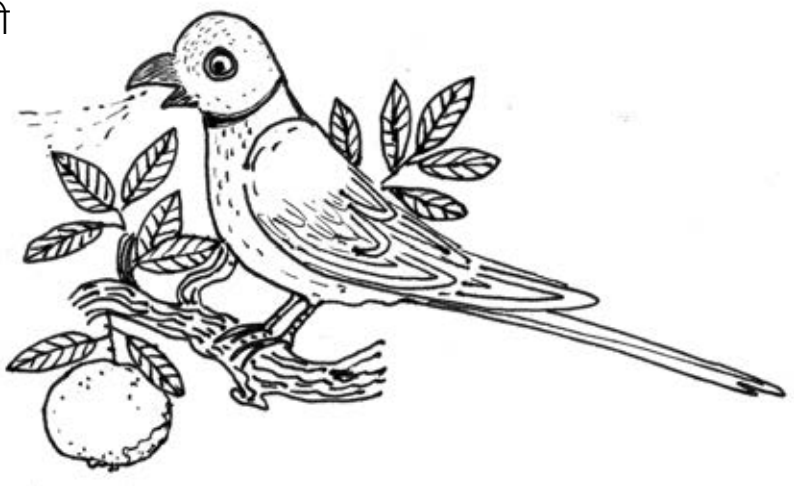

नानी कहे कहानी

चन्दू की नानी
कहे कहानी,
एक था शरबत
एक था पानी,
नानी पीये शरबत
चन्दू पीये पानी,
रूठ गया चन्दू
खत्म हुई कहानी।

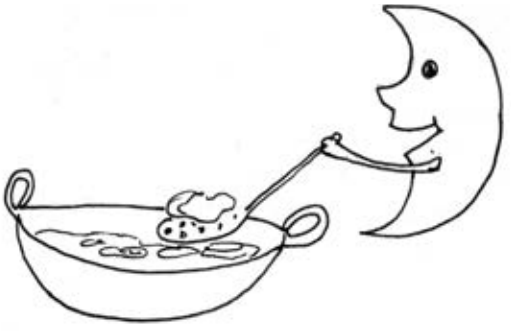

चन्दा मामा

चन्दा मामा दूर के,
बड़े पकाए मूँग के।
आप खाएँ थाली में,
हमें खिलाएँ प्याली में।
प्याली गई टूट,
मामा गए रूठ।
लाएँगे नई प्यालियाँ,
बजा-बजाके तालियाँ।

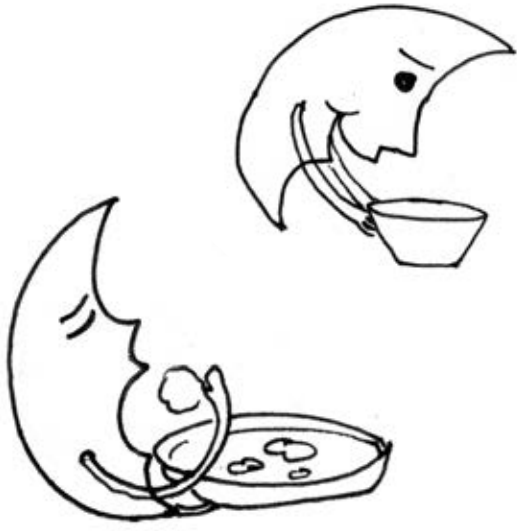

पतंग

सर सर सर सर उड़ी पतंग,
फर फर फर फर उड़ी पतंग।

इसको काटा, उसको काटा,
खूब लगाया, सैर सपाटा।

अब लड़ने में जुटी पतंग,
अरे कट गई, लुटी पतंग।

– सोहनलाल द्विवेदी

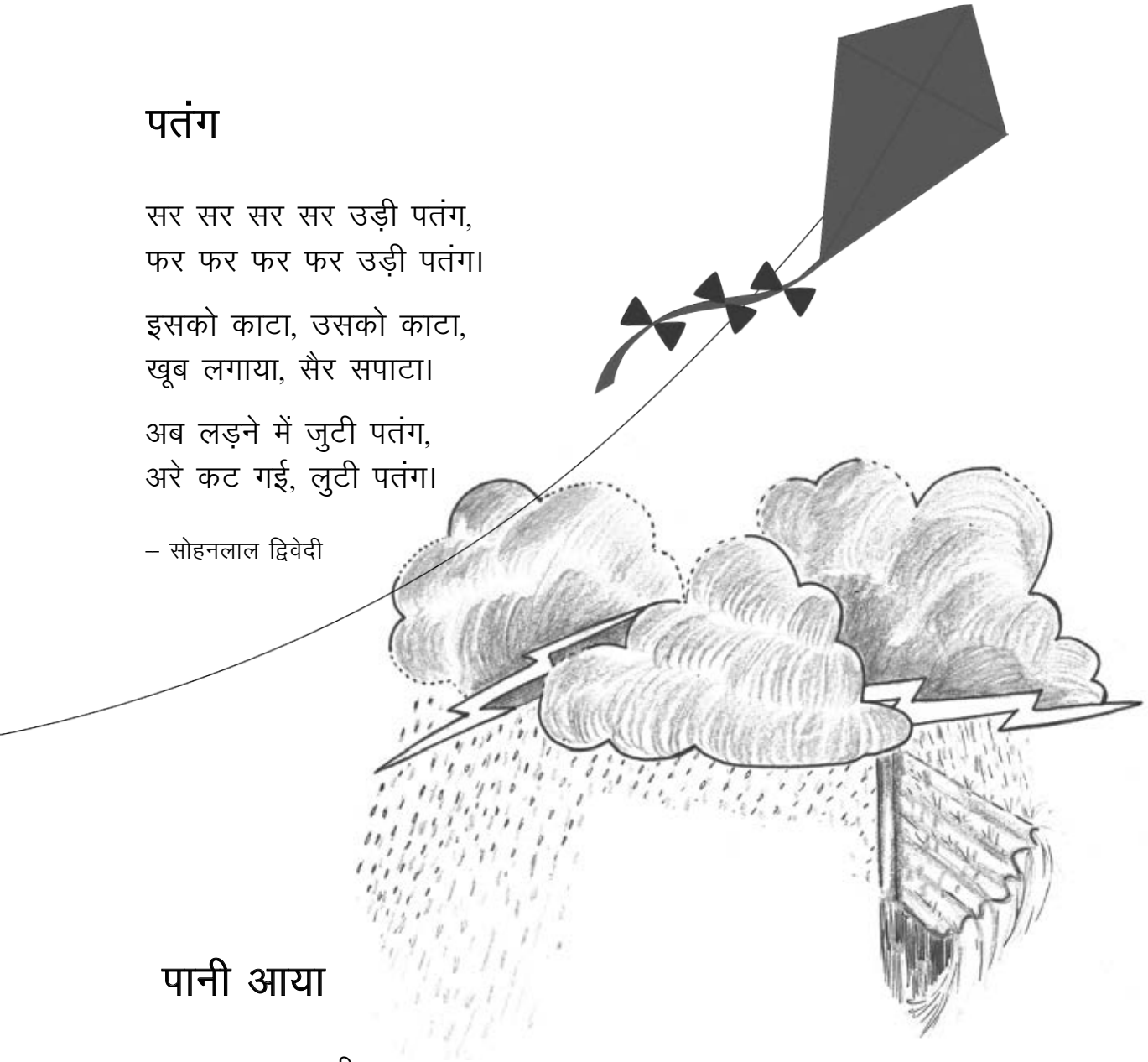

पानी आया

अररररररर पानी आया!
हररररररर पानी आया!!
बादल गरजे धड़ धड़ धड़ धड़,
बूँदें बरसीं तड़ तड़ तड़ तड़!
टीनें बोलीं भड़ भड़ भड़ भड़,
अजब शोर हैं जग में छाया!
अररररररर पानी आया!

बिजली चमकी चम चम चम चम,
भागो घर को धम धम धम धम,
बोलो हर हर बम बम बम बम,
झोंका खूब हवा का आया,
अररररररर पानी आया!

– सोहनलाल द्विवेदी

एक बुढ़िया

कहीं एक बुढ़िया थी जिसका
नाम नहीं था कुछ भी,
वह दिन भर खाली रहती थी
काम नहीं था कुछ भी।
काम न होने से उसको
आराम नहीं था कुछ भी,
दोपहरी, दिन, रात, सवेरा,
शाम नहीं था कुछ भी।

– निरंकार देव सेवक

राम सहाय

क्यों जी बेटा राम सहाय,
इतनी जल्दी कैसे आए?
अभी तो दिन के दो ही बजे हैं,
कहो आजकल बड़े मज़े हैं।

हाथी

हाथी आता झूमके,
धरती मिट्टी चूमके,
कान हिलाता आता है,
गन्ने, पत्ते खाता है,
देखो इसके लम्बे दाँत,
मुँह के अन्दर दूसरी पाँत,
आँखें इसकी छोटी-छोटी,
सूँड तो इसकी काफी मोटी।

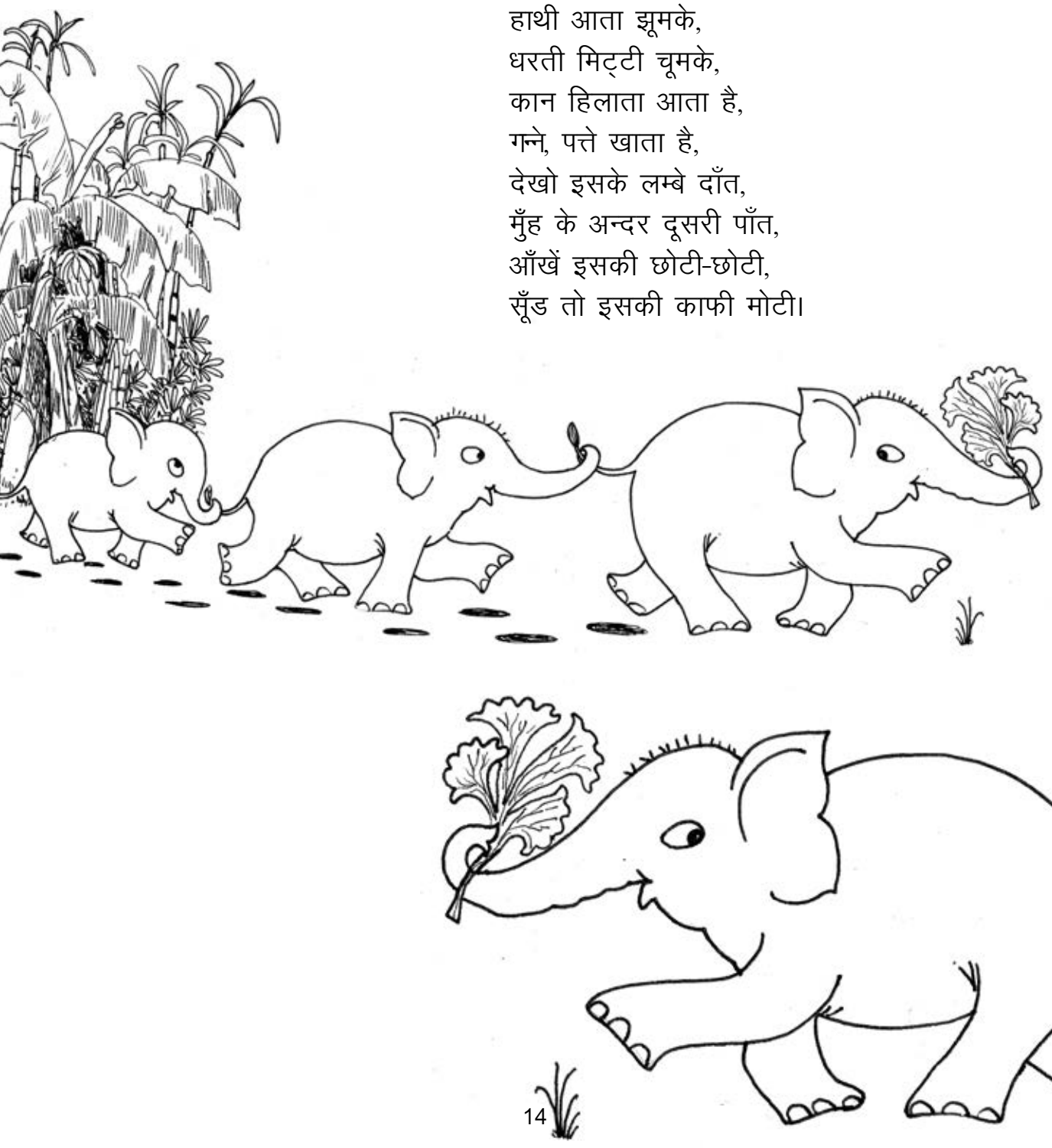

धम्मक-धम्मक

धम्मक-धम्मक आता हाथी,
धम्मक-धम्मक जाता हाथी,
अपनी सूँड उठाता हाथी,
अपनी सूँड गिराता हाथी,
अपनी पूँछ हिलाता हाथी,
धम्मक-धम्मक आता हाथी।

जब पानी में जाता हाथी,
भर-भर सूँड नहाता हाथी,
कितने केले खाता हाथी,
यह तो नहीं बताता हाथी,
धम्मक-धम्मक आता हाथी,
धम्मक-धम्मक जाता हाथी।

– प्रयाग शुक्ल

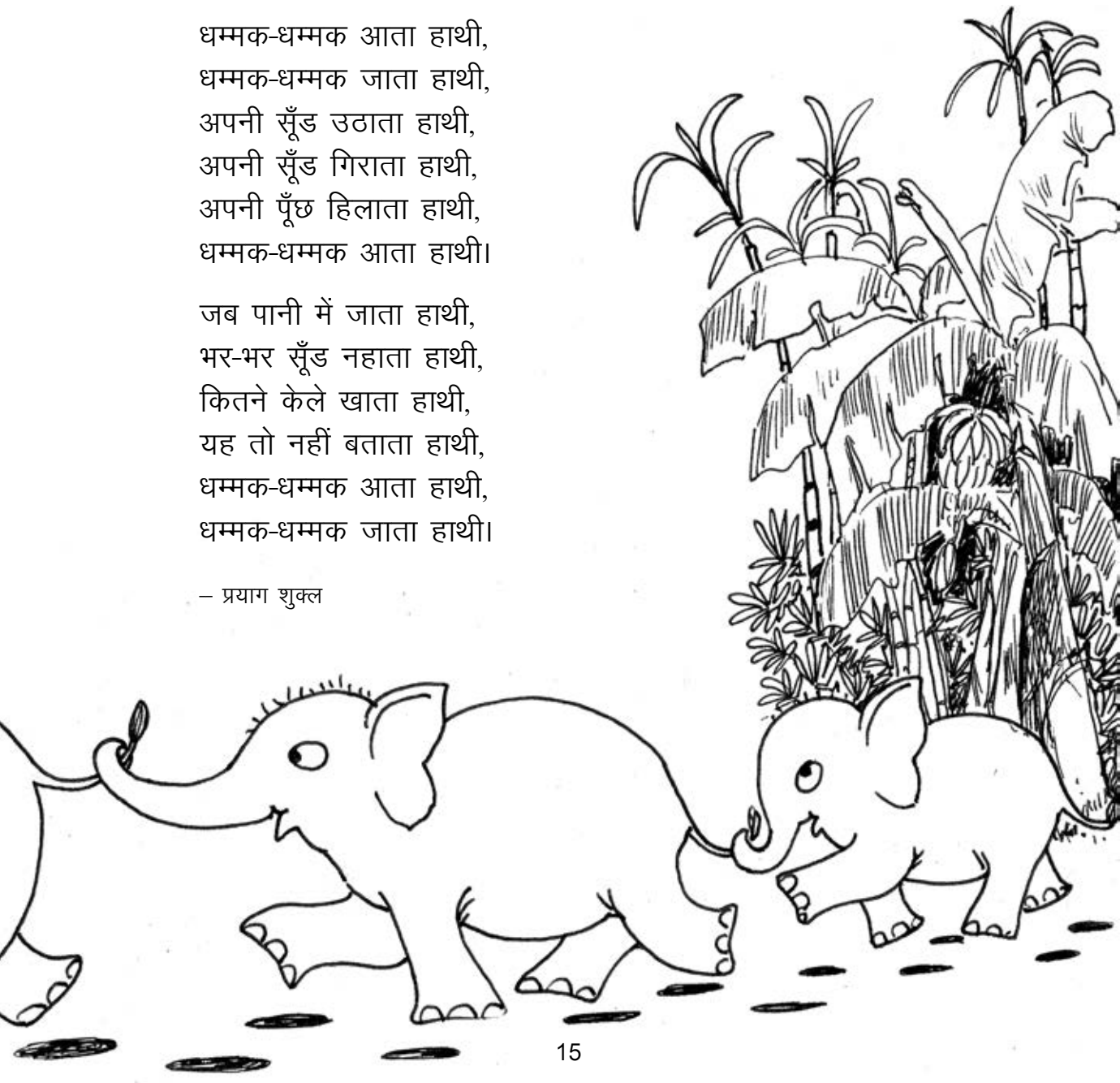

मुर्गा बोला

मुर्गा बोला कुकड़ूँ कूँ
चल मेरे भैया रुकता क्यूँ
कुत्ता भौंके, भों-भों-भों
अटकी गाड़ी पौं-पौं-पौं
बकरी आई, बिल्ली आई,
में-में आई, म्याऊँ-म्याऊँ आई
धक्की गाड़ी धौं-धौं-धौं
चल दी गाड़ी पौं-पौं-पौं।

चिड़िया-चिड़िया उड़ती जा

पाँच छोटी चिड़िया खा रहीं अनार,
एक चिड़िया उड़ गई, बाकी बचीं चार।
चिड़िया-चिड़िया उड़ती जा।
चिड़िया-चिड़िया खुशी से गा।

चार छोटी चिड़िया बजा रही थीं बीन,
एक चिड़िया उड़ गई, बाकी बचीं तीन।
चिड़िया-चिड़िया उड़ती जा।
चिड़िया-चिड़िया खुशी से गा।

तीन छोटी चिड़िया धान रही थीं बो,
एक चिड़िया उड़ गई, बाकी बचीं दो।
चिड़िया-चिड़िया उड़ती जा।
चिड़िया-चिड़िया खुशी से गा।

दो छोटी चिड़िया धूप रही थीं सेंक,
एक चिड़िया उड़ गई, बाकी रह गई एक।
चिड़िया-चिड़िया उड़ती जा।
चिड़िया-चिड़िया खुशी से गा।

क्या-क्या काला

इंजन काला, साइकिल काली
दोनों की आवाज़ निराली

इंजन करता,
छुक-छुक-छुक
साइकिल करती,
खुट-खुट-खुट

कौआ काला, कोयल काली,
दोनों की आवाज़ निराली
कौआ करता,
काँव-काँव
कोयल करती,
कुहू-कुहू

गाते जाओ रुकते क्यूँ
कोयल करती, कुहू-कुहू।

दाढ़ी काली,
मूँछें काली
आँखें काली,
चोटी काली

अर्रर..., भूल हो गई।
बूढ़ों की दाढ़ी होती सफेद
धोती सफेद, टोपी सफेद।

आँखें भी नहीं पूरी काली,
बीच में काली, बाकी सफेद,
टोपी काली, धोती सफेद

आगे देख, पीछे देख,
इनके भी हैं रंग अनेक

कोयला काला, चूना सफेद,
टायर काला, कागज़ सफेद।

सड़कें काली, दाँत सफेद,
काजल काला, चावल सफेद।

कुछ है काला, कुछ है सफेद।
बाहर देख, भीतर देख।
क्या है काला? क्या है सफेद?

गाय काली, गाय सफेद,
घोड़ा काला, घोड़ा सफेद।

मुर्गी काली, अण्डा सफेद,
मुर्गी सफेद, अण्डा सफेद।
क्या है काला, क्या है सफेद?

भैंस काली, दूध सफेद,
नहीं माने तो दुहकर देख।

कुछ है काला, कुछ है सफेद।
बाहर देख, भीतर देख,
ऊपर देख, नीचे देख,

क्या है काला, क्या है सफेद?
क्या है काला, क्या है सफेद?

– प्राशिका समूह

एक-अनेक

एक-एक-एक
बनते अनेक

हाथ एक
उँगली अनेक

पेड़ एक
डालें अनेक

डाल एक,
पत्ते अनेक।

चिड़िया एक,
पंख अनेक।

पुस्तक एक,
पन्ने अनेक।

शाला एक,
बच्चे अनेक।

गाँव एक,
घर अनेक।

बादल एक,
बूँदें अनेक।

जंगल एक,
पेड़ अनेक,
पेड़ अनेक।

लाल-लाल

लाल, लाल, लाल, लाल,
क्या सब कुछ होता लाल?
सुबह का सूरज लाल-लाल,
शाम का सूरज लाल-लाल।

लाल, लाल, लाल ,लाल,
हमारा खून लाल-लाल।
तोते की चोंच लाला-लाल,
मसूर की दाल लाल-लाल।

लाल, लाल, लाल, लाल,
जलती आग लाल-लाल।
पकी हुई मिर्च लाल-लाल,
कटा तरबूज़ लाल-लाल।

और क्या-क्या होता लाल,
जल्दी ढूँढो लाल-लाल।
लाल, लाल, लाल, लाल,
और क्या-क्या होता लाल?

– प्राशिका समूह

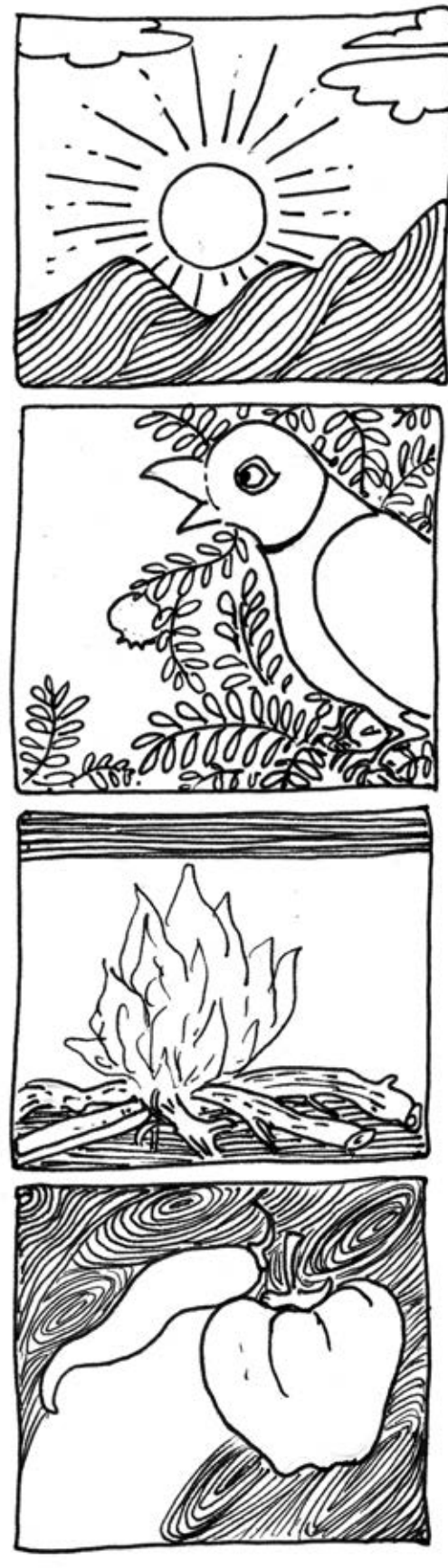

पकौड़ी गीत

आलू की पकौड़ी, दही के बड़े,
मुन्नी की चुन्नी में तारे जड़े।

मूँग की मंगोड़ी, कलमी बड़े,
मँगू की छत पर दो बन्दर लड़े।

खस्ता कचौड़ी, काँजी के बड़े,
गप्पू जो फिसले तो उलटे पड़े।

– रामकृष्ण खद्दरजी

बन्दर मामा

बन्दर मामा पहन पाजामा
दावत खाने आए,
पीला कुरता, टोपी जूता
पहन बहुत इतराए।
बन्दर मामा...

रसगुल्ला रख बोले लूँ चख,
डाला मुँह में गप से,
नरम-नरम था, बड़ा गरम था
जीभ जल गई लप से।
बन्दर मामा...

बन्दर मामा फेंक पाजामा
आँसू भर-भर रोए,
घर पर पहुँचे, थे झल्लाए
बिस्तर पर जा सोए।
बन्दर मामा...।

चूहा

वह देखो वह आता चूहा,
आँखों को चमकाता चूहा।
मूँछों में मुस्काता चूहा,
लम्बी पूँछ हिलाता चूहा।
मक्खन-रोटी खाता चूहा,
बिल्ली से डर जाता चूहा।

– निरंकार देव सेवक

बन्दर

बन्दर नहीं बनाते घर,
घूमा करते इधर-उधर।
आकर कहते खों-खों-खों,
रोटी हमें न देते क्यों?
छीन-झपट ले जाएँगे,
बैठ पेड़ पर खाएँगे।

– निरंकार देव सेवक

जामुन

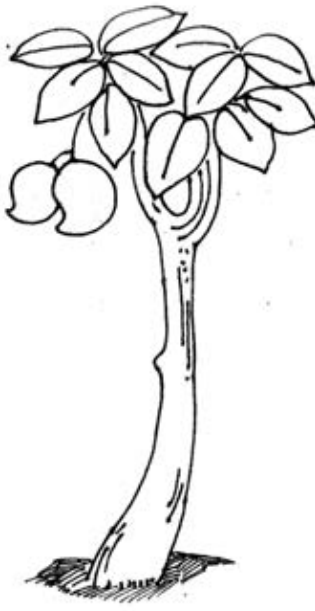

पौधा तो जामुन का ही था,
लेकिन आए आम,
पर जब खाया, तो यह पाया,
ये तो हैं बादाम।
जब उनको बोया ज़मीन में,
पैदा हुए अनार,
पकने पर हो गए सन्तरे,
मैंने खाए चार।

– श्रीप्रसाद

बिल्ली

चूहों की बस्ती में आकर,
बिल्ली ने दुकान जमाई।
लगी बेचने सस्ते दामों,
मीठे बिस्कुट और मलाई।
चूहे दौड़-दौड़कर आते,
लेते और मज़े से खाते।
पर वे वापस न जा पाते,
बिल्ली का भोजन बन जाते।

बिल्ली बोले म्याऊँ

बिल्ली बोले म्याऊँ,
कुतिया करे चाऊँ,
बिल्ली बोले म्याऊँ,
कुतिया करे चाऊँ।

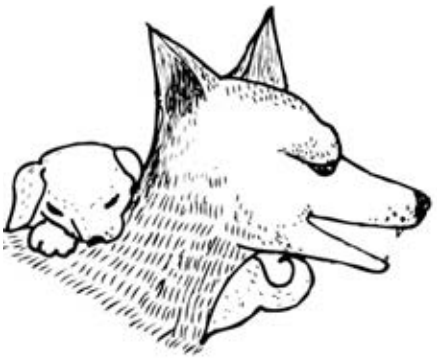

पिंजरे से मैना बोले,
अन्दर कभी न आऊँ।
बिल्ली बोले म्याऊँ,
कुतिया करे चाऊँ।

बन्दर करता खों-खों-खों,
मुर्गा करता कुकड़ूँ कूँ,
नहीं मानो तो बच्चों सुन लो,
कोयल कुहके कुहू-कुहू।

कौआ करता काँव-काँव,
पपीहा बोले पीहू-पीहू,
सुनकर बच्चों डर मत जाना,
शेर करता हाऊँ।

बिल्ली बोले म्याऊँ
कुतिया करे चाऊँ
बन्दर करता खों-खों-खों
शेर बोला हाऊँ।

चींटा

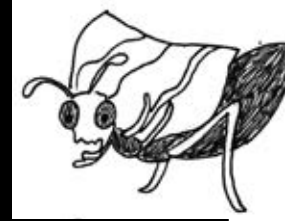

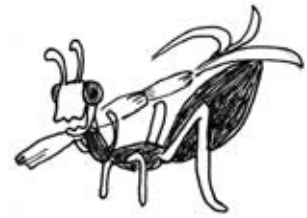

चींटा-चींटा दूध ला,
दूध लाकर दही जमा,
बढ़िया-बढ़िया दही जमा,
खट्टा-मीठा दही जमा।

चींटा-चींटा गन्ना ला,
गन्ना लाकर शक्कर बना,
चींटी भूखी आएगी,
झट-पट वो खा जाएगी।

चींटा-चींटा शक्कर ला,
शक्कर लाकर शरबत बना।
चींटी प्यासी आएगी,
झट-पट वो पी जाएगी।

चींटा-चींटा घर बना,
चींटी धूप से आएगी,
देख के खुश हो जाएगी,
झट-से वो रुक जाएगी।

चींटा-चींटा बाज़ार जा,
शक्कर ला, चावल ला,
रोटी ला, पानी ला,
झट-पट जा, झट-पट आ।

चींटी जब घर आएगी,
देख के खुश हो जाएगी,
तेरे ही गुण गाएगी,
तेरे ही गुण गाएगी।

– प्राशिका समूह

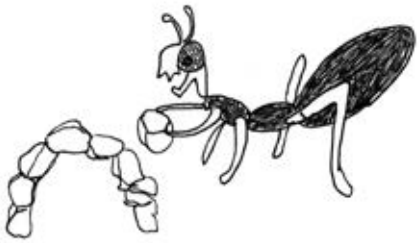

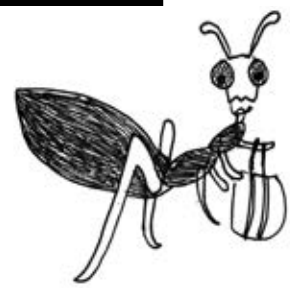

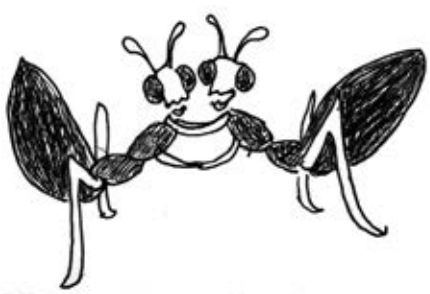

फुग्गा

फुग्गों का लेकर ढेर,
देखो आया है शमशेर।

हरे, बैंगनी, लाल, सफेद,
रंगों के हैं कितने भेद।

कोई लम्बा कोई गोल,
लाओ पैसा ले लो मोल।

मुट्ठी में लो इनकी डोर,
इन्हें घुमाओ चारों ओर।

हाथों से दो इन्हें उछाल,
लेकिन छूना खूब सम्हाल।

पड़ा किसी के ऊपर ज़ोर,
एक ज़ोर का होगा शोर।

गुब्बारा फट जाएगा,
खेल खत्म हो जाएगा।

– सर्वेश्वरदयाल सक्सेना

हिन-हिन

रामू बोला घोड़े से –
घोड़े, गिनती तो गिन।
घोड़ा पोथी लेकर बोला –
हिन-हिन-हिन, हिन-हिन-हिन

रामू बोला गधे से –
गधे – पढ़ क ख ग घ यों।
गधा पोथी लेकर बोला –
चीपों-चीपों-चीपों।

रामू बोला चूहे से –
चूहे – पढ़ अ आ इ ई।
चूहा पोथी लेकर बोला –
चीं-चीं-चीं, चीं-चीं-चीं।

रामू बोला कुत्ते से –
कुत्ते – पढ़ उ उ ए ओ।
कुत्ता पोथी लेकर बोला –
भों-भों-भों, भों-भों-भों।

– सोहनलाल द्विवेदी

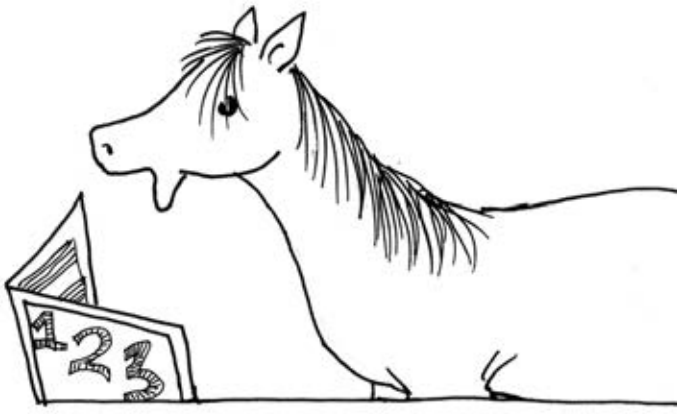

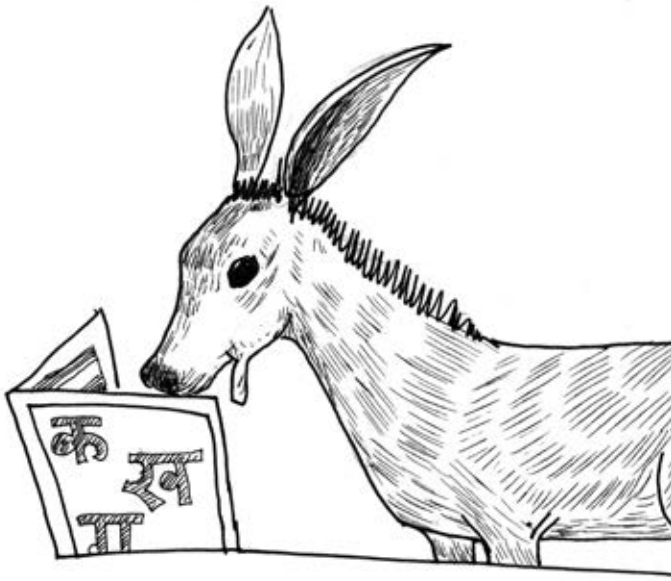

नानाजी-नानीजी

नानाजी नानीजी से बोले
अगर कहीं पा जाऊँ घोड़ा,
तुमसे हो जाऊँ मैं ऊँचा थोड़ा।

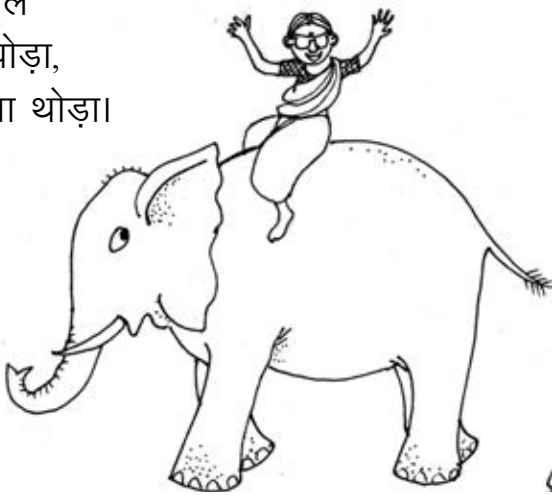

नानी बोली,
अगर कहीं हाथी पा जाऊँ,
तुमसे ऊँची मैं हो जाऊँ।

नानाजी को आया गुस्सा,
ज़ोर का लगाया ठसका
यदि ऊँट पर चढ़ जाऊँ मैं,
सबसे ऊँचा हो जाऊँ मैं।

नानीजी फिर कहाँ रुकी,
नाना के आगे नहीं झुकी।
नानी घर पर चढ़कर बोली,
सबसे ऊँची मेरी डोली।

नानाजी ने दौड़ लगा दी,
भागे-भागे ज़ोर से भागे,
ज़ोर से भागे, ज़ोर से भागे,
पहाड़ पर चढ़कर वो चिल्लाए,
मैंने ऊँचा आसन पाया!
सबसे ऊँचा आसन पाया!

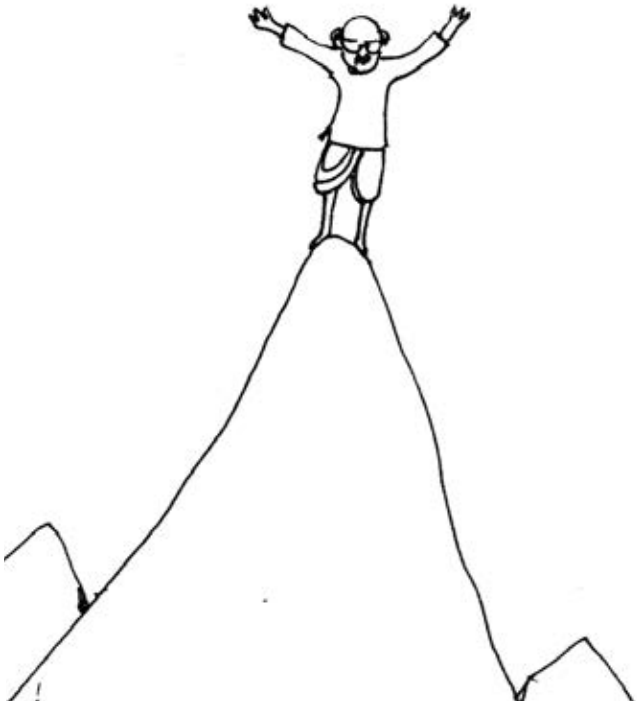

नानीजी चाँद पर चढ़कर बोली,
सबसे ऊँची मेरी डोली,
बादल जैसी मेरी डोली।

नानाजी मन ही मन बोले,
इससे ऊँचा होगा क्या?
नानाजी सूरज तक दौड़े,
गरम लगा चिल्लाकर बोले,
जल गया...आ! आ!

– प्राशिका समूह

खट-खट

एक था खट-खट,
बहुत ही नटखट।

वहाँ पर देखा,
उसने जमघट।

लोगों ने बोला,
चल हट, चल हट।

पट-पट, पट-पट,
कट-कट, कट-कट।

एक दिन झटपट,
गया वो पनघट।

जमघट में हो गई,
उसकी खटपट।

पर अड़ गया खट-खट,
पिट गया पट-पट।

ताड़ा डाड़ा डाड़ा डुम्ब,
और फिर भागा,

खटपट झटपट,
झट-झट, झट-झट,
पट-पट, फट-फट!

– प्राशिका समूह

गप्पू-गपोड़

एक था गप्पू गपोड़,
उसके जैसा कोई न जोड़।
एक दिन खाकर बौर,
गप्पू बोला वो रहा मोर।
सबने मुड़कर देखा क्या,
कोई न था, कुछ न था।
वापस मुड़कर देखा चोर,
गप्पू भागा लेकर बौर।
कैसा था गप्पू गपोड़,
उसके जैसा कोई न जोड़।

पान की डलिया

पान की डलिया क्यों लटकी?
लटकी है तो लटकी है
तेरा इसमें जाता क्या?
छाता तेरा उड़ गया,
उड़कर रास्ता मुड़ गया,
उड़ गया तो उड़ गया,
तेरा कौन-सा गुड़ गया।
चला गया तो गया चला
तू भी अपने घर को आ।

– तेजी ग्रोवर

हाथी

हाथी राजा बहुत भले
सूँड हिलाते कहाँ चले,
कान हिलाते कहाँ चले,
मेरे घर आ जाओ ना,
हलवा पूरी खाओ ना।

– निरंकार देव सेवक

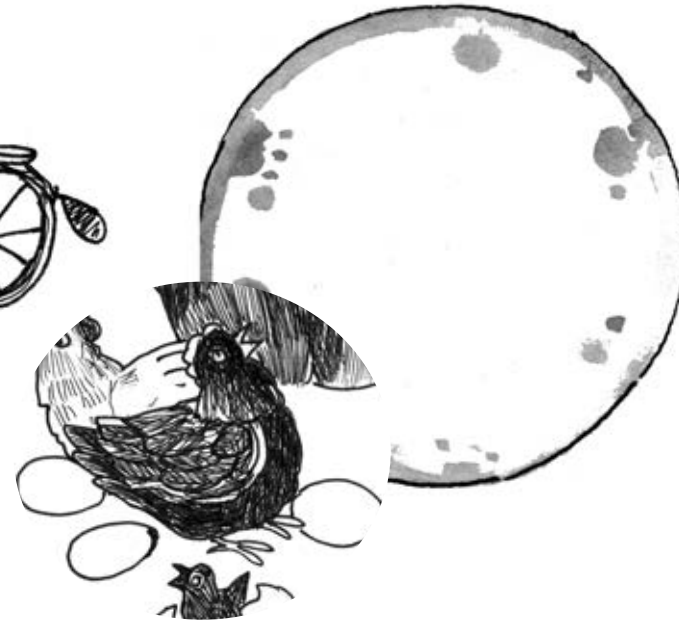

क्या-क्या होता गोल

गोल-गोल, गोल-गोल,
सूरज गोल, चन्दा गोल,
सिक्का गोल, चक्का गोल,
और क्या-क्या होता गोल,
नहीं मालूम तो घूमो गोल।

गोल-गोल,
गोल-गोल,
अब रुक आओ,
बैठो गोल।

फिर से बोल, फिर से बोल,
गोल, गोल, गोल, गोल,
गहरा कुआँ, गोल-गोल,
रात का चन्दा, गोल-गोल,
खिड़की, दरवाज़े...?

नहीं मालूम तो घूमो गोल।
गोल-गोल,
गोल-गोल,
अब जल्दी से,
बैठो गोल।

रोटी गोल, अण्टी गोल,
अण्डा गोल, डण्डा गोल,
झूठ कहूँ तो जल्दी बोल,
नहीं मालूम तो घूमो गोल।

गोल-गोल,
गोल-गोल,
घूमो-गोल,
घूमो-गोल।

अब जल्दी से बैठो गोल,
फिर से बोल, फिर से बोल।

साइकिल का पहिया...,
मोटर का पहिया...,
बैलगाड़ी का पहिया...,
रेलगाड़ी का पहिया...,
रात का सूरज...,

नहीं मालूम तो घूमो गोल,
रात का सूरज नहीं दिखता बोल,
दिखता नहीं है सच्ची बोल,
गोल-गोल-गोल-गोल,
गोल-गोल, गोल-गोल।

घूमो गोल, घूमो गोल,
अब जल्दी से बैठो गोल,
गोल-गोल, गोल-गोल।

– प्राशिका समूह

रेल का खेल

कलकत्ते से आई रेल,
आओ भाई खेलें खेल।
राजू सीटी बजाएगा,
मोहन झण्डी दिखाएगा,
सुनील इंजन चलाएगा,
बड़ा मज़ा तब आएगा।
कलकत्ते से आई रेल...
गीता गाना गाएगी,
मीरा ताली बजाएगी,
बाबू नाच दिखाएगा,
बड़ा मज़ा फिर आएगा।

आओ आओ खेलें खेल,
सब मिलकर बनाओ रेल।
दो मिलकर इंजन बन जाओ,
सीटी देकर रेल चलाओ।
झण्डी हरी दिखाऊँगा मैं,
सीटी तुरन्त बजाऊँगा मैं।
छुक-छुक, छुक-छुक चलती रेल,
आगे बढ़ती जाती रेल।

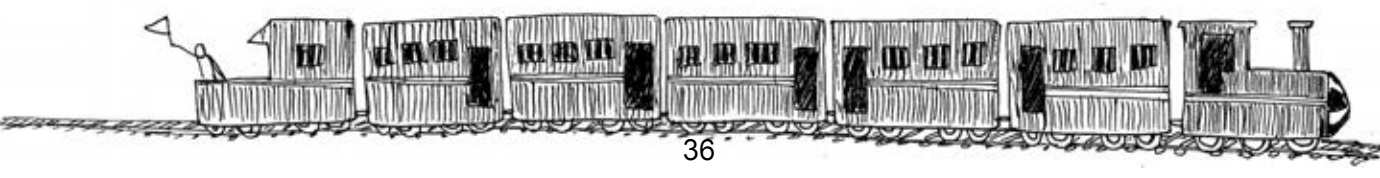

छुक-छुक रुक-रुक

गाड़ी करती छुक-छुक-छुक
लम्बू कहता रुक-रुक-रुक।
डिब्बा कहता घुस-घुस-घुस,
लम्बू चढ़ गया चुप-चुप-चुप,
इंजन बोला कू...ऊ...कू...,
गाड़ी चल दी छुक-छुक-छुक।

आगे थी एक भैंस खड़ी,
गाड़ी से वो नहीं डरी,
गाड़ी रुक गई चूँ...चर्र,
भैंस गिर पड़ी धड़ाम ढर्र।

गाड़ी चल दी छुक-छुक-छुक,
आगे आया बरबटपुर,
गाड़ी रुक गई चूँ...चर्र,
चढ़े लोग खूब भर-भर।

लम्बू था बिना टिकट,
उतरके भागा, टिक-टिक-टिक,
आगे जाकर पकड़ा गया,
बिना टिकट का मज़ा आ गया।

गाड़ी चल दी छुक-छुक-छुक,
इंजन करता कू...ऊ...ऊ...ऊ...कू,
छोटी होती दूर-दूर,
गाड़ी हो गई छू...।

– प्राशिका समूह

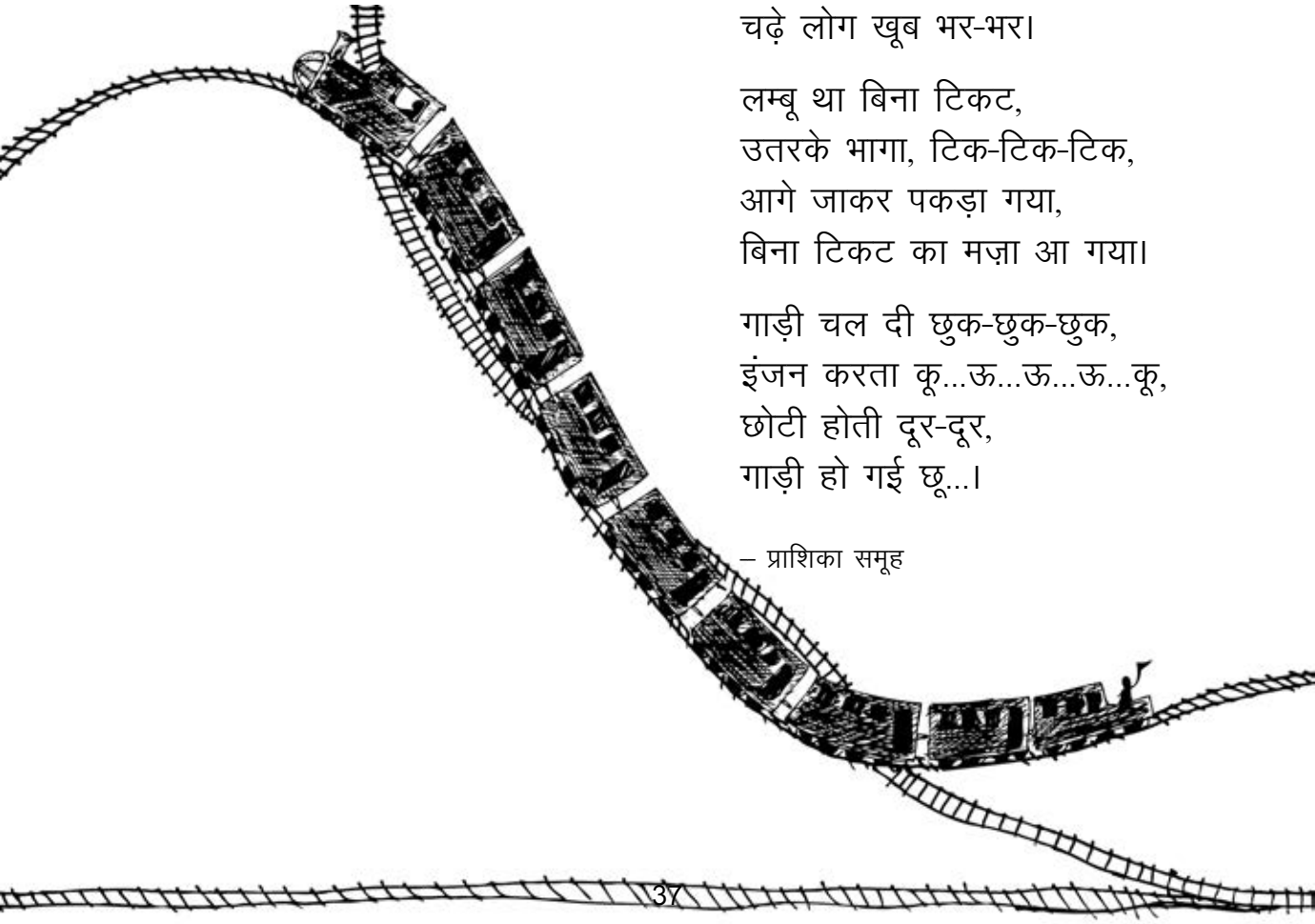

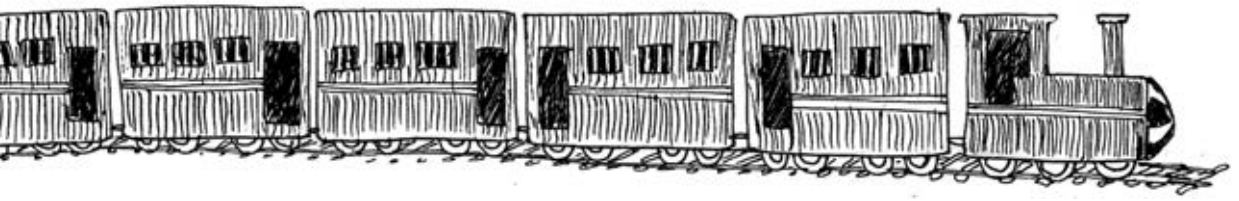

रेलगाड़ी मेरा नाम

रेलगाड़ी मेरा नाम,
छुक-छुक करना मेरा काम।

आओ बच्चों जल्दी आओ,
गाड़ी चलने वाली है।

अगला स्टेशन आएगा,
इंजन खाना खाएगा।

हम भी पूरी खाएँगे,
छुक-छुक, छुक-छुक जाएँगे।

रेलगाड़ी मेरा नाम,
छुक-छुक करना मेरा काम।

छिक-छिक, छुक-छुक,
छुक-छुक, छुक-छुक,

चलते-चलते जाती रुक।
हम सबकी यह रेल है,
हम सब का यह खेल है,

हम सब का यह मेल है,
चलती-फिरती रेल है।

चलते-चलते जाती रुक,
छुक-छुक, छुक-छुक, छुक-छुक।

नहीं कोयला खाती है,
इसे मिठाई भाती है।
नहीं छोड़ती यह धुआँ,
मुड़ जाती आए कुआँ,

चलते-चलते जाती रूक,
छुक-छुक, छुक-छुक, छुक-छुक।

इसमें नहीं लगा है इंजन,
सीटी देता है जगमोहन।
ले लो टिकट और चढ़ जाओ,
रेल सफर का मज़ा उड़ाओ।

चलते-चलते जाती रुक,
छुक-छुक, छुक-छुक, छुक-छुक।

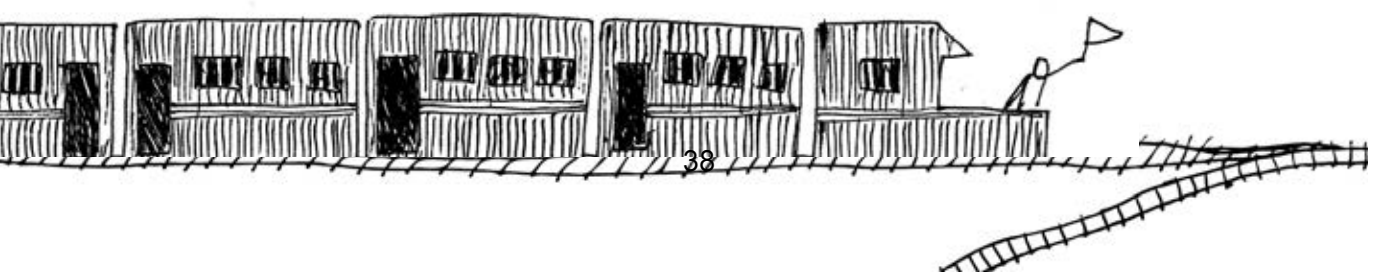

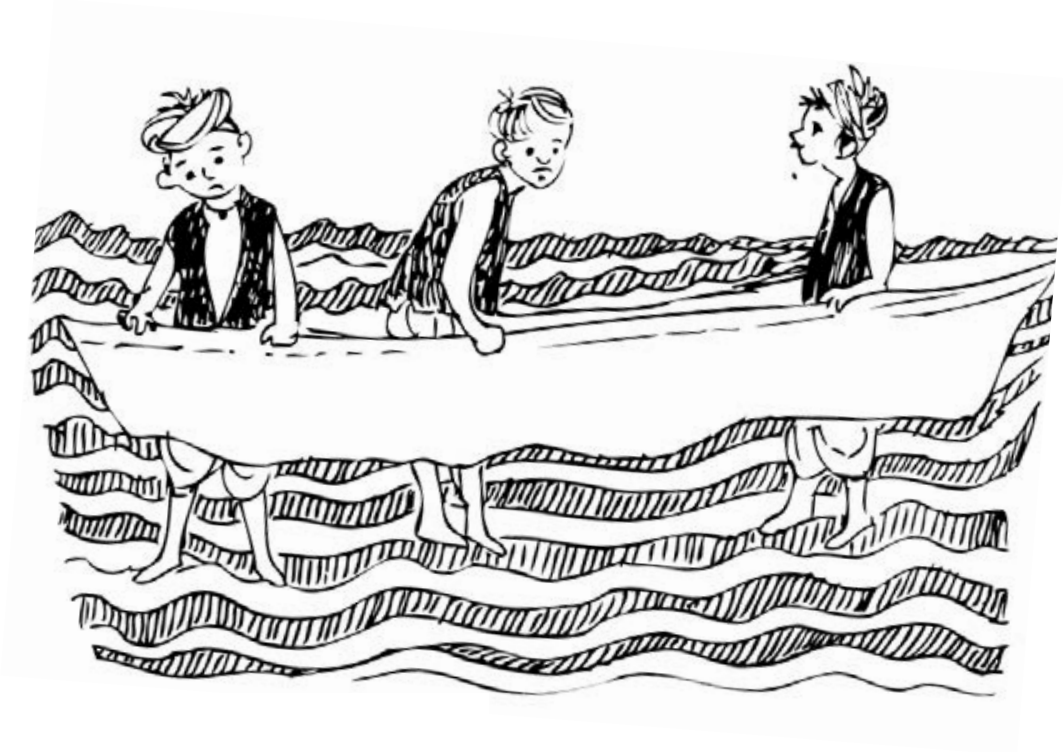

कुम्हार

एक समय थे तीन कुम्हार,
बड़े चतुर बहुत होशियार।
नाव बनाकर एक मिट्टी की,
वे चले समुन्दर पार।
पानी में जो नाव न घुलती,
बात हमारी आगे चलती।

बकरी

अरे-अरे क्या करती बकरी,
घास पराई चरती बकरी,
बकरी, बकरी उधर न जा,
इधर चली आ, आ-आ-आ,
वहाँ पकड़ ली जाएगी,
में-में-में चिल्लाएगी।

– निरंकार देव सेवक

बिल्ली बोले म्याऊँ

BILLI BOLE MIYAON

प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम समूह, एकलव्य द्वारा संकलित
चित्र व डिज़ाइन: कनक शशि
आवरण: कनक शशि

पहला संस्करण: 1995
पहला पुनर्मुद्रण: 1998
दूसरा पुनर्मुद्रण: मार्च 2001
तीसरा पुनर्मुद्रण: जुलाई 2003 (5000 प्रतियाँ)
1,45,000 प्रतियाँ प्रकाशित एवं वितरित
दूसरा संस्करण: जुलाई 2022 (3000 प्रतियाँ)
तीसरा पुनर्मुद्रण: मार्च 2024 (3000 प्रतियाँ)

मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत शासन एवं
सर रतन टाटा ट्रस्ट के वित्तीय सहयोग से विकसित।

कागज़: 80 gsm मेपलिथो व 220 gsm पेपर बोर्ड (कवर)
ISBN: 978-93-91132-55-2
मूल्य: ₹ 60.00

प्रकाशक: **एकलव्य फाउंडेशन**
जमनालाल बजाज परिसर, जाटखेड़ी
भोपाल - 462 026 (मप्र)
फोन: +91 755 297 7770-71-72
वेबसाइट: www.eklavya.in; ईमेल: books@eklavya.in

मुद्रक: आर के सिक्युप्रिंट प्रा लि, भोपाल; फोन: +91 755 268 7589

एक बुढ़िया

कहीं एक बुढ़िया थी जिसका
नाम नहीं था कुछ भी,
वह दिन भर खाली रहती थी
काम नहीं था कुछ भी।
काम न होने से उसको
आराम नहीं था कुछ भी,
दोपहरी, दिन, रात, सवेरा,
शाम नहीं था कुछ भी।

– निरंकार देव सेवक

एकलव्य

मूल्य: ₹ 60.00

9 789391 132552